म्यूच्यूअल फंड : एक परिचय
(Mutual Fund: An Introduction)

प्रो. (CMA) बृजेश कुमार जायसवाल,
प्राचार्य
श्री महंत रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर.

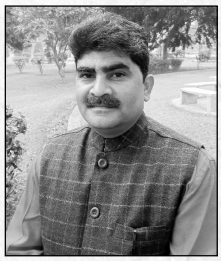

म्यूचुअल फंडा (Mutual fund) : जिसे हिन्दी में पारस्परिक निधि कहते हैं, किन्तु इसका अंग्रेजी नाम अधिक प्रचलित है, म्यूचुअल फंड एक प्रकार का एक सामूहिक निवेश होता है। निवेशकों के समूह मिल कर स्टॉक, अल्प अविधि के निवेश या अन्य प्रतिभूतियों (सेक्यूरीटीज) में निवेश करते हैं।। यूटीआई एएमसी भारत की सबसे पुरानी म्यूचुअल फंड कंपनी है। म्यूचुअल फंड में एक फंड प्रबंधक होता है जो फंड के निवेशों को निर्धारित करता है और लाभ और हानि का हिसाब रखता है। इस प्रकार हुए फायदे नुकसान को निवेशको में बॉट दिया जाता है। स्टॉक बाजार की पर्याप्त जानकारी न होने पर भी निवेश की इच्छा रखने वालों के लिए एक सुलभमार्ग म्यूचुअल फंड होता है। म्यूचुअल फंड संचालक (कंपनी) सभी निवेशकों के निवेश राशि को लेकर इकट्ठे करती है और उनसे कुछ सुविधा शुल्क भी लेती है। फिर इस राशि को उनके लिए बाजार में निवेश करती है। इनमें में निवेश करने का फायदा यह है कि निवेशक को इस बात की चिंता करने की जरूरत नहीं होती कि आप कब शेयर खरीदें या बेचे, क्योंकि यह चिंता फंड मैनेजर की होती है। वहीं निवेशक के निवेश का रखरखाव करने वाला होता है। एक दूसरा लाभ ये भी होता है, कि छोटे निवेशक बहुत कम राशि जैसे 100 रु. प्रतिमाह तक निवेश कर सकते हैं। ऐसे में उन्हें सिस्टेमेटिक इनवेस्टमेंट प्लान SIP लेना होता है, जिसमें बैंक से ये राशि मासिक सीधे फंड में स्थानांतरित होती रहती है।

म्यूचुअल फंड के शेयर की कीमत नेट ऐसेट वैल्यु या एनएवी (NAV) कहलाती है। इसकी गणना के लिए फंड के कुल मूल्य की निवेशको द्वारा खरीदे गए कुल शेयरों की संख्या से भाग दिया जाता है।

म्यूचुअल फंड की इक्विटी योजना में इंडेक्स फंड, डायवर्सिफाइड फंड, लार्ज कैप फंड, मिड कैप स्कीम और कर-बचाव योजना (टैक्स सेविंग स्कीम) जैसे बहुत से विकल्प उपलब्ध होते हैं। निवेशक निवेश के उद्देश्यों और लक्ष्य पर सही बैठने वाली योजना चुन सकते हैं।

एसेट क्लास के आधार पर मुख्य प्रकारः

इक्विटी फंड : ये फंड शेयरों (स्टॉक) में निवेश करते हैं. जिसका मुख्य उद्देश्य लॉन्ग-टर्म पूंजीगत वृद्धि (कैपिटल एप्रिसिएशन) है। इनमें लार्ज कैप, मिड-कैप और स्मॉल कैप जैसे उप-प्रकार शामिल है।

डेट फंड (फिक्स्ड इनकम फंड) : ये फंड सरकारी बॉन्ड, कॉर्पोरेट बॉन्ड और अन्य फिक्स्ड-इनकम सिक्योरिटीज में निवेश करते हैं, जिससे एक स्थिर आय प्राप्त होती है।

हाइब्रिड फंड (बैलेंस्ड फंड) : ये फंड इक्विटी और डेट इंस्ट्रूमेंट्स के मिश्रण में निवेश करते हैं, जिससे ग्रोथ और आय के बीच संतुलन बनता है।

निवेश उद्देश्य के आधार पर अन्य प्रकारः

इंडेक्स फंडः ये खास स्टॉक मार्केट इंडेक्स (जैसे निफ्टी 50 या सेंसेक्स) के प्रदर्शन को दोहराने का लक्ष्य रखते हैं।

सेक्टर फंड (थीमैटिक फंड) : ये फंड अर्थव्यवस्था के किसी विशिष्ट क्षेत्र, जैसे टेक्नोलॉजी या हेल्थकेयर, पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

टैक्स-सेविंग फंड (ELSS) : ये इक्विटी-लिंक्ड सेविंग स्कीम्स (ELSS) इनकम टैक्स एक्ट के सेक्शन 80C के तहत टैक्स लाभ प्रदान करती है।

लिक्विड फंडः ये शॉर्ट टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जो उच्च तरलता और कम जोखिम प्रदान करते हैं।

गोल्ड फंडः ये सोने से संबंधित इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिससे निवेशक बिना सोना खरीदे सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव से लाभ कमा सकते हैं।

फंड स्ट्रक्चर के आधार पर प्रकारः

ओपन-एंडेड फंड : इन फंडों को योजना के जीवनकाल में किसी भी समय खरीदा या बेचा जा सकता है, जिससे इनकी पूंजी में उतार-चढ़ाव होता रहता है।

क्लोज-एंडेड फंड : इनमें निवेश एक निश्चित अवधि के लिए होता है, जिससे तरलता कम होती है। निवेशकों को योजना के शुरू होने पर ही यूनिट खरीदनी होती

यह कैसे काम करता है?

पैसे का संग्रहः म्यूचुअल फंड कई निवेशकों से पैसा इकट्ठा करते हैं.

फंड मैनेजर : एक पेशेवर फंड मैनेजर इस जमा की गई पूंजी का प्रबंधन करता है.

विविध पोर्टफोलियो : फंड मैनेजर इस पैसे का उपयोग स्टॉक, बॉन्ड, और अन्य मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स जैसी विविध प्रतिभूतियों (सिक्योरिटीज) का एक पोर्टफोलियो बनाने के लिए करता है.

निवेश का विविधीकरणः कई अलग-अलग प्रतिभूतियों में निवेश करके, म्यूचुअल फंड जोखिमों को फैलाता है. जिससे किसी एक निवेश के खराब होने पर पूरा पैसा डूबने का जोखिम कम होता है।

आय और पूंजीगत लाभ : फंड मैनेजर इन प्रतिभूतियों में निवेश करके आय (जैसे लाभांश) उत्पन्न करता है और पूंजीगत लाभ कमाने का प्रयास करता है..

म्यूचुअल फंड के उद्देश्य :-

म्यूचुअल फंड निवेशक के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं :-

विविधीकरण : म्यूचुअल फंड तत्काल विविधीकरण प्रदान करते हैं, जो जोखिम को कम करने और जोखिम-समायोजित रिटर्न में सुधार करने में मदद करता है।

प्रमुख सुरक्षाः कुछ म्यूचुअल फंड कुछ हद तक प्रमुख सुरक्षा प्रदान करते हैं। म्यूचुअल फंड अत्यधिक विनियमित है और आक्रामक निवेश रणनीतियों को हतोत्साहित करते हैं।

पूंजी वृद्धि : म्यूचुअल फंड निवेश का प्राथमिक उद्देश्य पूंजी वृद्धि है।

कर बचत : कुछ म्यूचुअल फंड में कर बचत का लाभ होता है, जैसे ईएलएमएस।

म्यूचुअल फंड के लाभ (Advantages of Mutual Funds) :-

पेशेवर प्रबंधन (Professional Management):

म्यूचुअल फंड का प्रबंधन विशेषज्ञों द्वारा किया जाता है, जिससे निवेशकों को पेशेवर पोर्टफोलियो प्रबंधन मिलता है।

विविधीकरण (Diversification): म्यूचुअल फंड कई तरह के निवेश साधनों में पैसा लगाते हैं, जिससे किसी एक निवेश में गिरावट का असर पूरे पोर्टफोलियों पर कम पड़ता है।

लाभांश पुनर्निवेश (Dividend Reinvestment): फंड से मिलने वाले लाभांश को दोबारा निवेश किया जा सकता है, जिससे चक्रवृद्धि (कंपाउंडिंग) का फायदा मिलता है।

सुविधा (Convenience) : यह छोटे निवेशकों के लिए निवेश करने का एक आसान और सुविधाजनक तरीका है, क्योंकि वे छोटी राशि से भी शुरुआत कर सकते हैं।

म्यूचुअल फंड के नुकसान (Disadvantages of Mutual Funds) :-

शुल्क और खर्च (Fees and Expenses): म्यूचुअल फंड में प्रबंधन शुल्क, प्रशासनिक शुल्क, प्रवेश शुल्क (**Entry Load**) और निकास शुल्क (**Exit Load**) जैसे खर्च होते हैं, जो आपके रिटर्न को कम कर सकते हैं।

बाजार जोखिम (Market Risk) : म्यूचुअल फंड इक्विटी और बॉन्ड जैसे निवेशों में पैसा लगाते हैं, जिनकी कीमतें बाजार की स्थितियों के अनुसार घटती-बढ़ती रहती हैं, जिससे नुकसान हो सकता है।

कम नियंत्रण (Less Control) : निवेशकों का अपने पोर्टफोलियो पर सीधा नियंत्रण नहीं होता है, क्योंकि फंड मैनेजर निवेश के फैसले लेते हैं।

प्रबंधकीय जोखिम (Managerial Risk): फंड का रिटर्न फंड मैनेजर के कौशल और प्रदर्शन पर निर्भर करता है। अगर मैनेजर सही निवेश नहीं कर पाता, तो फंड के प्रदर्शन पर नकारात्मक असर पड़ सकता है।

अत्यधिक विविधीकरण (Over-diversification): कुछ मामलों में, बहुत अधिक विविधीकरण से फंड का लाभ कम हो सकता है।

***